अहकामे तस्वीर

आ़ला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रद़ियल्लाहो तआ़ला अन्हो



जानदार की तस्वीर हराम है और हुज़ूर के रोज़े व नालैन शरीफ़ की तस्वीर की फ़ज़िलत का बायान

का हिन्दी तरजमा

अहकामे तस्वीर

: तसनीफ़ :

अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादिरी फ़ाज़िले बरैलवी (अलैहिर्रहमा)

: बफ़ैज़ :

हुज़ूर मुफ़्तिए अअ्ज़म हज़रत अल्लामा शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी (अलैहिर्रहमा)

मस्अला (सवाल)

अज़ :- रियासत रीवाँ मुर्सिला मौलवी रहीम ख़ान, 26 ज़िल हिज्जा 15 हिजरी

1 हुज़ूर —عليه الصلاة والسلام— की तस्वीर ज़ियारत का सवाब हासिल करने की ग़र्ज़ से बनाना दुरूस्त व जाइज़ है या नहीं ? और (तस्वीर) बनाने वाला और ख़रीदार सवाब का हक़दार होगा या नहीं ?

2 अगर कोई आहज़रत (हुज़ूर) —صلى الله تعالى عليه وسلم— की तस्वीर व आप के बुराक़ की तस्वीर और हज़रत जीब्रील —عليه السلام— की तस्वीर बना कर या बनवा कर सवाब हासिल करने की नियत से अपने पास रखे, और अक्सर मीलदे नबी की मजलिसों में इन तस्वीरों को इन्तिज़ाम के साथ नुमाइश के लिए ज़िक्रे मेराज शरीफ़ के वक़्त हाज़रीने मजलीस के सामने पेश करे और याक़ीन इस बात का दिलाए के गोया हुज़ूर मेराज को तशरीफ़ ले जाते हैं, और लोगों को छूने व चुमने के लिए कहे तो येह काम उस का शरअन जाइज़ हो सकता है ? और येह तमाम काम जो सवालात में लिखे गए शरीअत के मुताबिक़ होंगे या ग़ैर शरई ?

3 हुज़ूर —صلى الله تعالى عليه وسلم— के रोज़े मुक़द्दसा की तस्वीर ज़ियारत का सवाब हासिल करने की ग़र्ज़ से बनवा कर अपने पास रखना और येह ख़्याल करना के जिस तरह अस्ल (रोज़े) की तअज़ीम व इज़्ज़त से हम को सवाब हासिल होता हैं (वैसा ही) तअज़ीमे (हुज़ूर के रोज़े की) तस्वीर व नक़्ल से भी सवाब हासिल होता है ?

4 अगर येह ना जाइज़ व ग़ैर शरई हो तो उन तस्वीरों को क्या करना चाहिये और नक़्शा रोज़ा-ए-मुतहर (यानी हुज़ूर के रोज़े की तस्वीर) "दलाइलुल ख़ैरात" में से निकाल देना बेहतर होगा या बदस्तूर बाकी व कायम रखना ।

अलजवाब

اللهم لك الحمد صل على نبيك نبي الحمد وآله وصحبه

الخيار الحمد اسألك حسن الادب وصدق الحب لحبيبك الكريم

عليه وعلىٰ آله افضل الصلاة والتسليم ربّ انّى اعوذبك
مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ٥

अल्लाह — عزوجل ——— पनाह दे इब्लीसे लईन (मरदूद) की मक्कारियों से (उस की) सख़्त मक्कारी येह है कि आदमी से नेकियों के धोके में गुनाह कराता हैं और शहेद के बहाने ज़हेर पिलाता हैं - العياذ بالله رب العٰلمين उस शख़्स ने जो तीनों तस्वीरे बनाई (यानी हुज़ूर صلى الله عليه وسلم — बुराक़ व हज़रत जिब्रील عليه السلام — की तस्वीरे) और उन की ज़ियारत व छूने व बोसा लेने वाले व कराने वाले ने येह ख़्याल किया कि वोह हुज़ूर पुरनूर सैय्यदुल मुर्सालीन - صلى الله تعالىٰ عليه وسلم — की मुहब्बत का हक़ अदा कर रहा हैं और हुज़ूर को राज़ी करता है । हालाँकि हक़ीक़त में वोह अपनी इन ग़लत हरकतों से हुज़ूरे अक़दस सैय्यदे आलम صلى الله تعالىٰ عليه وسلم — की खुली ना फ़रमानी कर रहा हैं । उस पर पहले ना राज़ होने वाले हुज़ूरे वाला —— صلى الله تعالىٰ عليه وسلم — है । हुज़ूर फ़ख़रे आलम — صلى الله تعالىٰ عليه وسلم — ने जानदार की तस्वीर बनाना, बनवाना और उसे अपने पास तअज़ीम के साथ रखना सब हराम फ़रमाया । और उस पर सख़्त सख़्त अज़ाब की ख़बरें इरशाद फ़रमाई और उनको मिटाने का हुक्म दिया हदीस में इस बारे में बहुत ज्यादा बयान आया हैं ।

हदीस ① :- सहीहैन (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़) व मुस्नदे इमामे अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास —— رضى الله تعالىٰ عنهما —— से रिवायत है रसूलुल्लाह —— صلى الله تعالىٰ عليه وسلم —— फ़रमाते है ....

كُلُّ مُصَوِّرٍ فِى النَّارِ يَجْعَلُ اللّٰهُ لَهٗ بِكُلِّ صُوْرَةٍ صَوَّرَهَا نَفْسًا فَتُعَذِّبُهٗ فِىْ جَهَنَّمَ -

हर तस्वीर बनाने वाला जहन्नम में हैं अल्लाह तआला हर तस्वीर के बदले जो उसने बनाई थी एक मख़लूक़ पैदा करेगा के वोह जहन्नम में उसे अज़ाब करेंगी ।

हदीस ② :- उन्हीं में यानी (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़ व मुस्नदे इमामे अहमद) में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद —— رضى الله تعالىٰ عنه —— से रिवायत है रसूलुल्लाह — صلى الله عليه وآله وسلم —— फ़रमाते है ....

— اِنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ الْمُصَوِّرُوْنَ ——————

बेशक निहायत सख़्त अज़ाब रोज़े क़ियामत तस्वीर बनाने वालों पर हैं ।

हर्दास ③ :- उन्हीं में यानी (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़ व मुस्नदे इमामे अहमद) में हज़रत अबू हुरैरह — رضى الله تعالىٰ عنه — से रिवायत है रसूलुल्लाह

قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ .... फ़रमाते है اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

— ذَھَبَ یَخْلُقُ کَخَلْقِیْ فَلْیَخْلُقُوْا ذَرَّۃً اَوْ لِیَخْلُقُوْا حَبَّۃً اَوْ لِیَخْلُقُوْا شَعِیْرَۃً —

अल्लाह - عزوجل ——— फ़रमाता है उससे बड़ कर ज़ालिम कौन जो मेरे बनाये हुए की तरह बनाये भला कोई चियूटी या गेंहू या जव का दाना तो बना दें ।

हदीस ④:- सहीहैन ने यानी (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़) व सुनन नसाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उ़मर — رضی اللہ تعالیٰ عنہما - से रिवायत है रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم —— फ़रमाते है ....

—— اِنَّ الَّذِیْنَ یَصْنَعُوْنَ ھٰذِہِ الصُّوَرَ یُعَذَّبُوْنَ ——

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُقَالُ لَهُمْ اَحْيُوْا مَا خَلَقْتُمْ ——

बेशक येह जो तस्वीरें बनाते हैं क़ियामत के दिन अ़ज़ाब किये जाएेगे उन से कहा जाएेगा येह सूरतें जो तुम ने बनाई थी उन में जान ड़ालों ।

हदीस ⑤:- मुस्नदे अहमद व सहीहैन व सुनन नसाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास —— رضی اللہ تعالیٰ عنہما —— से रिवायत है रसुलुल्लाह — صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم — फ़रमाते है ....

مَنْ صَوَّرَ صُوْرَۃً فَاِنَّ اللّٰہَ مُعَذِّبُہٗ ——

حَتّٰی یَنْفُخَ فِیْھَا الرُّوْحَ وَلَیْسَ بِنَافِخٍ ——

जो कोई तस्वीर बनाये तो बेशक अल्लाह तआला उसे अ़ज़ाब करैगा यहाँ तक के (उससे कहा जाएगा) उस में रूह फूंके और वोह न फूंक सकेगा ।

हदीस ⑥:- मुस्नदे अहमद व जामअ़े तिर्मिज़ी में हज़रत अबू हुरैरह — رضی اللہ تعالیٰ عنہ — से रिवायत है रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم — फ़रमाते है ....

یَخْرُجُ عُنُقٌ مِّنَ النَّارِ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ لَہٗ عَیْنَانِ یُبْصِرُ بِھِمَا وَاُذُنَانِ یَسْمَعَانِ وَلِسَانٌ یَّنْطِقُ یَقُوْلُ اِنِّیْ وُکِّلْتُ بِثَلٰثَۃٍ بِمَنْ جَعَلَ مَعَ اللّٰہِ اِلٰھًا اٰخَرَ وَبِکُلِّ جَبَّارٍ عَنِیْدٍ وَّبِالْمُصَوِّرِیْنَ ——

क़ियामत के दिन जहन्नम से एक गर्दन निकलेगी जिस की दो आँखें होगी

देखने वाली, और दो कान सुनने वाले और एक ज़बान बात करती, वोह कहेगी मैं तीन फ़िरक़ों पर मुकर्रर की गाई हूँ जो अल्लाह का शरीक बाताए और हर ज़ालिम, हटधर्म और तस्वीर बनाने वाले पर ।

इमाम तिर्मिज़ी ने कहा येह हदीस हसन सही ग़रीब है ।

हदीस ⑦ :- इमाम अहमद मुस्नद में और तबरानी मुअजमे कबीर और अबू नईम हुलयतुल औलिया में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ تعالی عنہ से रिवायत करते है, रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है............

—— ان اشد اهل النار عذابا يوم القيمة من قتل نبيا او قتله نبي او امام جائر وهولاء المصورون ولفظ احمد اشد الناس عذابا يوم القيمة رجل قتل نبيا او قتله نبي او رجل يضل الناس بغير علم او مصور يصور التماثيل -

---

बेशक रोज़े क़ियामत सब दोज़ख़ियों में ज़्यादा सख़्त अज़ाब उस पर है जिस ने किसी नबी को शहीद किया या किसी नबी ने जिहाद में उसे क़त्ल फ़रमाया या ज़ालिम बादशाह या जो शख़्स बग़ैर इल्म हासिल किये लोगों को बहकाने लगे, और तस्वीर बनान वालों पर ।

हदीस ⑧ :- बयहकी "शुएबुल ईमान" में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ تعالی عنہما से रिवायत करते है रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है ....

ان اشد الناس عذابا يوم القيمة من قتل نبيا او قتله نبي او قتل احد والديه والمصورون وعالم لم ينتفع بعلمه -

---

बेशक रोज़े क़ियामत सब से ज़्यादा सख़्त अज़ाब में वोह है जो किसी नबी को शहीद करे या कोई नबी उसे जिहाद में क़त्ल फ़रमाए या जो अपने माँ बाप को क़त्ल करे और तस्वीर बनाने वाले पर और वोह आलिम जो इल्म पढ़ कर गुमराह हो ।

हदीस ⑨ :- इमाम मालिक व इमाम अहमद व इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम व नसाई व इब्ने माजा हज़रत उम्मुल मोमेनीन आएशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالی عنہا से रिवायत करते है ....

قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم من سفر وقد سترت سهوة بقرام فيه تماثيل فلما راه رسول الله -

سترت سهوة لي بقرام فيه تماثيل فلما رآه رسول الله صلى الله
تعالى عليه وسلم تلون وجهه وقال يا عائشة اشد الناس عذابا
عند الله يوم القيمة الذين يضاهؤن بخلق الله وفي رواية
للشيخين قام على الباب فلم يدخل فعرفت في وجهه الكراهية
فقلت يا رسول الله اتوب الى الله والى رسوله ماذا اذنبت فقال
رسول الله صلى الله عليه وسلم ان اصحاب هذه الصور يعذبون
يوم القيمة فيقال لهم احيوا ما خلقتم وقال ان البيت الذي
فيه الصور لا تدخله الملئكة وفي اخرى لهما تناول الستر
فهتكه وقال من اشد الناس عذابا يوم القيمة الذين يشبهون بخلق الله

यानी रसूलुल्लाह —صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم एक सफ़र पर तशरीफ़ फ़रमा हुए थे मैं ने एक दरवाज़े पर तस्वीर वाला पर्दा लटकाया हुआ था, जब हुज़ूरे अक़्दस ——صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم— वापस तशरीफ़ लाए उस पर्दे को देख कर आप के चेहरह अनवर का रंग बदल गाया आप अन्दर तशरीफ़ न लाए उम्मुल मोमेनीन फ़रमाती हैं मैं ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह ——صلی اللہ علیہ وسلم—— मैं अल्लाह की तरफ़ और अल्लाह के रसूल की तरफ़ तौबा करती हूँ मुझ से क्या ख़ता हुई हुज़ूरे अक़्दस ——صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم— ने वोह पर्दा उतार कर फेंक दिया और फ़रमाया अए आएशा अल्लाह तआला के यहाँ सख़्त तर अज़ाब रोज़े क़ियामत उन तस्वीर बनाने वालों पर हैं जो ख़ुदा के बनाए हुए की नक़्ल करते हैं उन पर रोज़े क़ियामत अज़ाब होंगा उन से कहा जाएगा येह जो तुम ने बनाया हैं उस में जान ड़ालो, जिस घर में तस्वीर होती हैं उस में रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।

हदीस (10) :- अबू दाऊद तिर्मिज़ी व नसाई व इब्ने हिब्बान हज़रत अबू हुरैरह رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत करते है रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم —— फ़रमाते है...

اتاني جبريل عليه الصلاة والسلام فقال لي مر برأس التماثيل يقطع
فتصير كهيأة الشجرة وأمر بالستر فيقطع فيجعل وسادتين منبوذتين
توطئان

(मुख़्तसर हदीस येह है) मेरे पास जिब्रीले अमीन — علیہ الصلاۃ والسلام -

ने हाज़िर हो कर अर्ज़ कि हुज़ूर हुक्म दे कि मुर्तियों के सर काट दिये जाएँ के पेढ़ की तरह रह जाए और तस्वीर वाले पर्दों के लिए हुक्म फ़रमाएँ के काट कर दो चादरें बना ली जाएं कि ज़मीन पर डाल कर पावं से रौन्दी जाएँ ।

इमाम तिर्मिज़ी ने कहा के येह हदीस हसन सही है ।

हदीस (11) से (14) तक :- सही बुख़ारी में हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर और सही मुस्लिम में हज़रत उम्मुल मोमिनीन आएशा सिद्दीक़ा — رضی اللہ تعالیٰ عنہا — और उसी बुख़ारी व मुस्लिम मे हज़रत उम्मुल मोमिनीन मैमूना और मुस्नदे इमाम अहमद में सही सुबूतों के साथ हज़रत असामा बिन ज़ैद — رضی اللہ تعالیٰ عنہم — से रिवायत है रसूलूल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم फ़रमाते है, जिब्रीले अमीन علیہ الصلاۃ والتسلیم ने हुज़ूरे अक़्दस ——— صلی اللہ علیہ وسلم ——— से अर्ज़ की...........

——— اِنَّا لَا نَدْخُلُ بَيْتًا فِيْهِ كَلْبٌ وَّصُوْرَةٌ ———

हम रहमत के फ़रिश्तें उस घर में नहीं जाते जहाँ कुत्ता या तस्वीर हो ।

हदीस (15) :- अहमद व नसाई व इब्ने माजा व इब्ने ख़ज़ीमा बिन मन्सूर हज़रत अमीरूल मोमिनीन अली मुरतज़ा — کرم اللہ تعالیٰ وجہہ — से रिवायत है रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने फ़रमाया (और आप से) जिब्रील अमीन ने अर्ज़ की ....

اِنَّمَا ثَلٰثٌ لَمْ يَلِجْ مَلَكٌ مَادَامَ فِيْهَا وَاحِدٌ مِّنْهَا كَلْبٌ

اَوْ جَنَابَةٌ اَوْ صُوْرَةُ رُوْحٍ ———

तीन चीज़ें हैं कि जब तक उन में से एक भी घर में होंगी कोई फ़रिश्ता-ए-रहमत व बरकत का उस घर में दाख़िल न होगा 1-कुत्ता 2-ना पाक शख़्स 3-या जानदार की तस्वीर ।

हदीस (16) - (17) :- मुस्नदे अहमद व सही बुख़ारी व सही मुस्लिम व जामेए तिर्मिज़ी व सुनन नसाई व इब्ने माजा में हज़रत अबू तलहा और सुनन अबी दाऊद व नसाई व सही इब्ने हिब्बान में हज़रत अमीरूल मोमिनीन मौला अली رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم फ़रमाते है........

——— لَا تَدْخُلُ الْمَلٰئِكَةُ بَيْتًا فِيْهِ كَلْبٌ وَّلَا صُوْرَةٌ ———

रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो

हदीस (18) :- नसाई व इब्ने माजा व शाशी व अबू यअला और अबू नईम

हुलिया में और ज़िया सही मुख़्तारह में अमीरूल मोमेनीन अ़ली كرم الله تعالیٰ وجہہ से रिवायत करते है..

صَنَعْتُ طَعَامًا فَدَعَوْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَجَآءَ فَرَاٰی تَصَاوِیْرَ فَرَجَعَ (زاد الاربعۃ الاخیرون) فَقُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ مَا رَجَعَکَ بِاَبِیْ وَاُمِّیْ قَالَ اِنَّ فِی الْبَیْتِ سِتْرًا فِیْہِ تَصَاوِیْرُ وَاِنَّ الْمَلٰٓئِکَۃَ لَا تَدْخُلُ بَیْتًا فِیْہِ تَصَاوِیْرُ ————————

मैं ने हुज़ूर पुरनूर علیہ صلوات اللہ تعالیٰ وسلام —की दावत की हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हुए, पर्दे पर कुछ तस्वीरें बनी देखी, वापस तशरीफ़ ले गए, मैं ने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप हुज़ूर पर क़ुर्बान आप किस सबब से वापस हुए, फ़रमाया घर में एक पर्दे पर तस्वीरें थी और रहमत के फ़रिश्ते उस घर में नहीं जाते जिस मे तसवीरें हों ।

हदीस (19) :- सही बुख़ारी व सुनन अबी दाऊद में हज़रत उम्मुल मोमेनीन आ़एशा —رضی اللہ تعالیٰ عنہا से रिवायत है..

———— اِنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَمْ یَکُنْ یَتْرُکُ فِیْ بَیْتِہٖ شَیْئًا فِیْہِ تَصَالِیْبُ اِلَّا نَقَضَہٗ ————————

नबी —صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم— जिस चीज़ में तस्वीर देख लेते उसे बे टोड़े न छोड़ते ।

हदीस (20) :- मुस्लिम व अबू दाऊद व तिर्मिज़ी हिब्बान बिन हसीन से रिवायत करते है ....

———————— قَالَ لِیْ عَلِیٌّ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ اَلَا اَبْعَثُکَ عَلٰی مَا بَعَثَنِیْ عَلَیْہِ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَنْ لَا تَدَعَ صُوْرَۃً اِلَّا طَمَسْتَہَا وَلَا قَبْرًا مُشْرِفًا اِلَّا سَوَّیْتَہٗ ————————

मुझ से अमीरूल मोमेनीन मौला अ़ली —کرم اللہ وجہہ— ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें उस काम पर न भेजूँ जिस पर मुझे रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने मामूर फ़रमा कर के भेजा कि जो तस्वीर देखूँ उसे मिटा दूँ और जो क़ब्र हद्दे शरअ़ (यानी एक बालिश्त)

से ज़्यादा ऊँची पाऊँ उसे हद्दे शरअ़ (यानी एक बालिश्त) के बराबर कर दूँ क़ब्र की बुलन्दी में हद्दे शरअ़ एक बालिश्त है ।

——— ورواه ابو يعلى وابن جرير فلم يسمّيا حيان انّما قالا عن علي انّه دعا صاحب شرطته فقال له فذكر ابمعناه ———

हदीस (21) :- इमाम अहमद सही सुबूतों के साथ अमीरुल मोमिनीन अ़ली كرم الله تعالیٰ وجهه से रिवायत करते है रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم एक जनाज़े में थे हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया ....

أيّكم ينطلق ——————————
الى المدينة فلا يدع بها وثنا الّا كسره ولا قبرا الّا سوّاه ولا صورة الّا لطخها ——————————

तुम में कौन ऐसा है मदीने जा कर हर बुत को टोड़ दे और हर क़ब्र बराबर कर दे और हर तस्वीर मिटा दे । एक साहब ने अ़र्ज़ की के मैं या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم फ़रमाया तो जाओ । वोह जा कर वापस आए और अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ——صلی اللہ علیہ وسلم—मैं ने सब बुत तोड़ दिये और सब क़ब्रें बराबर कर दी और सब तस्वीरें मिटा दी । रसूलुल्लाह——صلی اللہ علیہ وسلم——ने फ़रमाया

——— من عاد الى صنعة شيئ من هذا فقد كفر بما انزل على محمّد ———

अब जो येह सब चीज़ें बनाएगा वोह कुफ़्र व इन्कार करेगा उस चीज़ के साथ जो मुहम्मद —صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم——पर नाज़िल हुई। والعياذ بالله ربّ العٰلمين

मुसलमान ईमान की नज़र से देखे कि सही व साफ़ हदीसों में इस पर कैसी सख़्त सख़्त वईदें (अ़ज़ाब की ख़बरें) फ़रमाई गाई और येह तमाम हदीसे पूरी आ़म हैं जिन में हरगिज़ किसी तस्वीर किसी तरीके की ख़ुसूसियात नहीं तो दीन की क़ाबिले तअ़ज़ीम तस्वीरों (यानी किसी बुज़ुर्ग वग़ैरा की तस्वीर को) को ख़ुदा व रसूल के हुक्मों से अलग ख़्याल करना बिल्कुल झूट व बचकाना ख़्याल है, बल्कि शरअ़ मुतहर (शरीअ़ते इस्लामी) में ज़्यादा शिद्दत का अ़ज़ाब तस्वीरों की तअ़ज़ीम पर ही है और ख़ुद बुत परस्ती की शुरूआ़त इन्हीं क़ाबिले तअ़ज़ीम तस्वीरों से हुई । क़ुरआने अज़ीम में जो पाँच बुतों का ज़िक्र सूरए नूह علیہ الصلاۃ والسلام में फ़रमाया..... वुद, सवाअ़, यग़ूस, याऊक़, नस्र, ये पाँच बन्दगाने सालेहीन (नेक बन्दे) थे कि लोगों

ने उन के इन्तेक़ाल के बाद इब्लीस मरदूद के बहकावे में आ कर उन की तस्वीरें बना कर उन की मजलिसों में क़ायम की फिर बाद की आने वाली नस्लों ने उन्हें ख़ुदा समझ लिया ।

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है

ودّ وسواع ويغوث ويعوق ونسر اسماء ———

رجال صالحين من قوم نوح فلما هلكوا اوحى الشيطان الى قومهم

ان انصبوا الى مجالسهم التي كانوا يجلسون انصابا وسموها باسماهم

ففعلوا فلم تعبد حتى اذا هلك اولئك وتنسخ العلم عبدت هذا

इस के बावजूद अगर वसवसे और नफ़्स जिस से सुकून न पाएँ तो सा[फ़] खुली सही हदीसों से ख़ास क़ाबिले तअज़ीम तस्वीरों का जज़िया लीजिये ।

हदीस (22) :- सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है......

انه قال دخل النبي صلى الله تعالى عليه وسلم البيت فوجد فيه

صورة ابراهيم وصورة مريم عليهما الصلاة والسلام

فقال صلى الله تعالى عليه وسلم اما لهم فقد سمعوا ان الملئكة

لا تدخل بيتا فيه صورة الحديث هذه القطعة في الحج وفي الانبياء

ان النبي صلى الله تعالى عليه لما راى الصور في البيت لم يدخل

حتى امر بها فمحيت الحديث وفي المغازي فاخرج صورة ابراهيم

واسمعيل عليهما الصلاة والسلام الحديث هذه كلها روايات

البخاري وذكر ابن هشام في سيرته قال وحدثني بعض

اهل العلم ان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم

دخل البيت يوم الفتح فراى فيه صور الملئكة وغيرهم

فراى ابراهيم عليه الصلاة والسلام مصورا فذكر الحديث

الى ان قال ثم امر بتلك الصور كلها فطمست ———

इन अहादीस का ख़ुलासा येह हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم फ़तहे मक्का के रोज़ काब-ए-मुअज़्ज़मा के अन्दर तशरीफ़ फ़रमा हुए उस में हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल व हज़रत मरयम व फ़रिश्तों—علیہم الصلاۃ والسلام वग़ैरा की तस्वीरों पर नज़र पड़ी हुज़ूरे अक़्दस—صلی اللہ علیہ وسلم—वैसे ही पलट आए और फ़रमाया खबरदार हो बेशक उन बनाने वलों के कान तक भी येह बात पहुँची हुई थी के जिस घर में कोई तस्वीर हो उस में रहमत के फ़रिश्ते नहीं जाते। फिर हुक्म फ़रमाया के जित्नी तस्वीरें नक़्श वाली (यानी कच्चे रंग वाली) सब मिटा दी जाए और जित्नी मुजस्सम (यानी पक्के रंग से बनी हुई तस्वीरें) है सब बाहर निकाल दी जाए। इन्हीं (तस्वीरों) में हज़रत सैय्यदना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह व हज़रत सैय्यदना इस्माईल ज़बीहुल्लाह—صلی اللہ تعالیٰ علیٰ ابنہما الاکرام وعلیہما وبارک وسلم—की तस्वीरें भी बाहर लाई गई, जब तक काब-ए-मुअज़्ज़मा सब तस्वीरों से पाक न हो गाया हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने अपने क़दमे अकरम से उसे शर्फ़. न बख़्शा।

हदीस (23) :- मुस्नदे इमाम अहमद में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत है..

قَالَ كَانَ فِي الْكَعْبَةِ صُوَرٌ فَأَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ أَنْ يَمْحُوَهَا فَبَلَّ عُمَرُ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ثَوْبًا وَمَحَاهَا بِهِ فَدَخَلَهَا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا فِيهَا شَيْءٌ وَفِي حَدِيثِهِ عِنْدَ الْإِمَامِ الْوَاقِدِيِّ وَكَانَ عُمَرُ قَدْ تَرَكَ صُورَةَ إِبْرَاهِيمَ فَلَمَّا دَخَلَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَآهَا فَقَالَ يَا عُمَرُ أَلَمْ آمُرْكَ أَنْ لَا تَدَعَ فِيهَا صُورَةً ثُمَّ رَأَى صُورَةَ مَرْيَمَ فَقَالَ امْسَحُوا مَا فِيهَا مِنَ الصُّوَرِ قَاتَلَ اللّٰهُ قَوْمًا يُصَوِّرُونَ مَا لَا يَخْلُقُونَ ——————

हदीस (24) :- उमर बिन शीवह, हज़रत असामा बिन ज़ैद —رضی اللہ عنہما से रिवायत करते है..

—— إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ ——

تعالیٰ علیہ وسلم دخل الکعبۃ فامرنی فاتیتہ بماء فی دلو فجعل یبل الثوب ویضرب بہ علی الصور ویقول قاتل اللہ قوما یصورون ما لا یخلقون ــــــــــــ

हदीस (25) :- अबू बकर बिन अबी शीबह, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर- رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत करते हैं.........................

ان المسلمین تجردوا فی الازر واخذوا الدلاء وابتدروا زمزم یغسلون الکعبۃ ظھرھا وبطنھا فلم یدعوا اثرا من المشرکین الا محوہ وغسلوہ ــــــــــــ

इन तमाम हदीसों का हासिल येह हैं कि काबे में जो तस्वीरें थी हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم- ने अमीरूल मोमेनीन उमर फ़ारूके आज़म ــــ رضی اللہ تعالیٰ عنہ को हुक्म फ़रमाया के उन्हें मिटा दो, उमर - رضی اللہ تعالیٰ عنہ ــــ और दीगर सहाबा-ए-किराम चादरें उतार उतार कर हुज़ूरे अक़दस के हुक्म को पूरा करने में लग गए । ज़मज़म शरीफ़ से डोल के डोल भर कर आते और काबे के अन्दर बाहर से धोया जाता कपड़े भिगो भिगो कर तस्वीरें मिटाई जाती यहाँ तक के वोह मुशरिकों के आसार सब धो कर मिटा दिये गए जब हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने खबर पाई के अब कोई निशान बाकी न रहा उस वक्त आप अन्दर रौनक अफ़रोज़ हुए (यानी काबे के अन्दर तशरीफ़ लाए) इत्तेफ़ाक़ से कुछ तस्वीरें जैसे हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह —علیہ الصلاۃ والسلام- की तस्वीर का निशान बाकी रह गया था फिर नज़र फ़रमाई तो हज़रत मरयम की तस्वीर भी साफ़ न धुली थी हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم ने असामा बिन ज़ैद رضی اللہ تعالیٰ عنہ से एक डोल पानी मँगा कर ख़ुद आप ने कपड़ा गिला कर के उन तस्वीरों को मिटाया और इरशाद फ़रमाया "अल्लाह की मार इन तस्वीरों के बनाने वालों पर"।

फ़तहुल बारी शरहे सही बुख़ारी में है...

فی حدیث اسامۃ انہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دخل الکعبۃ فرای صورۃ فدعا بماء فجعل یمحوھا وھو محمول علی انہ بقیت بقیۃ خفیت علی من محاھا اولا ــــ ــــ

हदीस (26) :- सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़) में उम्मुल मोमेनीन आएशा

सिद्दीक़ा —— رضی اللہ تعالیٰ عنہا —— से रिवायत है.....................................

لما اشتکی النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ذکر بعض نسائہ کنیسۃ یقال لہا ماریۃ وکانت ام سلمۃ وام حبیبۃ اتتا ارض الحبشۃ فذکرتا من حسنہا وتصاویر فیہا فرفع راسہ فقال اولئک اذا مات فیہم الرجل الصالح بنوا علی قبرہ مسجدا ثم صوروا فیہ تلک الصور اولئک شرار خلق اللہ

हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم — के मर्ज़ (बीमारी) में आप की कुछ बीबीयों ने एक गिरजा घर का ज़िक्र किया जिस का नाम "मारिया" था और उम्मुल मोमेनीन उम्मे सलमा व उम्मुल मोमेनीन उम्मे हबीबा मुल्के हबशा में हो आई थी और उन दोनों बीवीयों ने मारिया की ख़ूबसूरती और उस की तस्वीरों का जिक्र किया, हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने सर उठा कर फ़रमाया....येह लोग जब उन में कोई नेक बन्दा, नबी, या वली इन्तिक़ाल करता हैं तो उस की क़ब्र पर मस्जिद बना कर उस में तबर्रुक के तौर पर उस की तस्वीर लगाते हैं येह लोग बद तरीन लोग हैं।

हदीस (27) :- इमाम बुख़ारी "किताबुस्सलाम जामाए सही" में और अब्दुर रज़्ज़ाक़ व अबू बकर बिन शीबह अपने अपने मुसन्निफ़ में और बयहकी सुनन में असलम मौला अमीरूल मोमेनीन उमर —— رضی اللہ تعالیٰ عنہ —से रिवायत करतें है....

जब अमीरूल मोमेनीन मुल्के शाम को तशरीफ़ ले गए एक ज़मीनदार ने आ कर अर्ज़ की मैं ने हुज़ूर के लिए खाना तैयार कराया है मैं चाहता हूँ के हुज़ूर मेरे घर तशरीफ़ लाए के मेरे दोस्तों में मेरी इज़्ज़त बड़े, अमीरूल मोमेनीन ने फ़रमाया

—— انا لا ندخل الکنائس التی فیہا ھذہ الصور ——

हम उन घरों पर नहीं जाते जिन में तस्वीरें होती हैं।

हुक्म वाज़ेह हैं और मस्अला साफ़ और वोह हरकतें जो सवाल में पूछी गई यक़ीनन हराम और उन में सवाब का अक़ीदा खुली गुमराही है। उस शख़्स पर फ़र्ज़ है के इस हरकत से बाज़ आए और हराम में सवाब की उम्मीद से खौफ़ करे, न ख़ूद गुमराह हो न जाहिल मुसलमानों को गुमराह बनाए, उन तस्वीरों को ना आबाद जंगल में रास्ते से दूर लोगों की नज़र से बचा कर इस तरह दफ़्न कर दे कि जाहिलों को उन की हरगिज़ ख़बर न हो या किसी ऐसे दरया में के कभी सुख़ा न हो, जाहिलों की निगाह से छूपा कर गहरे पानी के हवाले यूँ कर दे कि पानी की मौजों से कभी

ज़ाहिर होने का ख़तरा न हो । واللہ یھدی من یشآء الی صراط مستقیم ۔

यह सब जानदार की तस्वीरों के मुतअल्लिक़ था ।

रहा नक्शा-रोज़ा-ए-मुबारका (यानी हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के रोज़े की तस्वीर) उस के जाइज़ होने में हरगिज़ कोई कलाम (बेहस) नहीं और न किसी तरह का शक । जिस तरह उन तस्वीरों (यानी जानदार की तस्वीरों) का हराम होना यक़ीनी हैं, यूँ ही इस के (यानी हुज़ूर के रोज़े का तस्वीर का) जाइज़ होना यक़ीनी व अज़माया हुआ हैं । हर (नबी की) शरीअत में जानदार की तस्वीर हराम फ़रमाई । हदीस नं 10 ने इस बात को साफ़ कर दिया ।

हदीस अव्वल में है कि एक तस्वीर बनाने वाले ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास —رضی اللہ تعالیٰ عنہما— की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की मैं तस्वीर बनाया करता हूँ इस का फ़तवा दीजिये- फ़रमाया पास आ वोह पास आया-फ़रमाया और पास आ वोह और पास आया यहाँ तक कि हज़रत ने अपना दस्ते मुबारक (हाथ शरीफ़) उस के सर पर रख दिया - फ़रमाया कि मैं तुझे न बताऊँ वोह हदीस जो मैं ने रसूलुल्लाह —صلی اللہ علیہ وسلم— से सुनी, फिर वोह हदीस बयान की जो तस्वीर बनाने वालों के जहन्नमी होने के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाई-उस ने निहायत ही ठन्डी साँस ली, हज़रत ने फ़रमाया.......— ویحک ان ابیت الا ان تصنع فعلیک بھذہ الشجرۃ وکل شیٔ لیس فیہ روح —

अफ़सोस तुझ पर अगर बे बनाए न बन पड़े तो पेड़ और बग़ैर रूह वाली चीज़ों की तस्वीरें बनाया कर ।

अइम्म-ए-मज़ाहिबे अरबा (यानी इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद बिन हम्मबल) वग़ैरा ने इस के (यानी हुज़ूर के रोज़े की तस्वीर) के जाइज़ होने की दलीले साफ़ बयान फ़रमाई के तमाम मस्लकों की किताबें इस के सुबूत से भरी पड़ी हैं, हलाँ के मस्अला खुला हुआ और हक़ साबित है मगर अव्वाम के वहेम को दूर करने के लिए और साबित क़दमी के लिए अइम्मा-ए-किराम व ओलमा-ए-आलाम की कुछ दलीलें इस बारे में पेश करूँगा के किन किन अकाबेरीन (बुज़ुर्गों) व वोह अज़ीम हसतीयों ने जिन पर एतेमाद किया जाए उन्हों ने मज़ारे मुक़द्दस और उसी तरह नलैने मुक़द्दस (हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की जूतियों मुबारक) की तस्वीर बनाई और उन की तअज़ीम और उन से तबर्रुक हासिल करते — आए और इस के मुतअल्लिक़ क्या क्या कलमात मोमेनीन के दिल को ख़ुशी देने वाले और मुनाफ़ेक़ीन का जिस से दम ही निकल जाए इरशाद फ़रमाए । ① इमाम असीम बिन नसतास ताबई मदनी ② इमाम मोहद्दिस जलीलुल क़द्र अबू नईम साहिबे हुलयतुल

औलिया ③ इमाम मोहद्दिस अल्लामा अबूल फ़रज अब्दुर रहमान इब्ने जूज़ी हम्बली ④ इमामुल यमन इब्ने असाकर ⑤ इमाम ताजुद्दीन ख़ाकहानी साहिबे फ़ज्रे मुनीर ⑥ अल्लामा सैय्यद नूरूद्दीन अली बिन अहमद समहूदी मदनी शाफ़ई साहिबे किताबुल वफ़ा वफ़ाउल वफ़ा ⑦ सैय्यदी आरिफ़बिल्लाह मुहम्मद बिन सुलैमन ज़ज़ूली साहिबुद दलाइल ⑧ इमाम मोहद्दिस फ़क़ीयह अहमद बिन हजर मक्की शाफ़ई साहिब जवाहरे मुनज़्ज़म ⑨ अल्लामा हुसैन बिन मुहम्मद बिन हसन दियार बकरी साहिबे अल ख़मीस फ़ी अहवालुल नफ़्से नफ़ीस — صلی اللہ علیہ وسلم ⑩ अल्लामा सैय्यदी मुहम्मद बिन अब्दुल बाकी ज़रकानी मालकी शारहे मुवाहिबुद दुनिया व मिनहु मुहम्मदिया ⑪ शेख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मोहद्दिस दहलवी साहिबे जज़्बुल क़ुलूब ⑫ मुहम्मदनिल आशिक़ बिन उमर हाफ़िज़ रूमी, हनफ़ी, साहिबे ख़ुलासतुल अख़्बार तरजमाते ख़ुलासतिल वफ़ा, वग़ैराहम अइम्मा व ओलमा ने मज़ारे अक़्दस व अकरम सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم व हज़राते सिद्दीक़े अकबर व फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالی عنہما की क़ब्रों के नक़्शे (तस्वीरें) बनाए ।

मुवाहिब और उस की शरह में हैं ....

①

مواہب اور اس کی شرح میں ہے: وقد روی ابوداؤد والحاکم من طریق القاسم بن محمد بن ابی بکر الصدیق قال دخلت علی عائشة فقلت یا اُمّہ اکشفی لی عن قبر النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وصاحبیہ الحدیث زاد الحاکم فرأیت رسول اللہ ای قبرہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مقدما وابابکر راسہ بین کتفی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وعمر راسہ عند رجلی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم قال ابوالیمن بن عساکر وهذه صفتہ

النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم | عمر رضی اللہ تعالی عنہ

ابوبکر رضی اللہ تعالی عنہ

وروی ابوبکر الآجری (ای الحافظ الامام توفی فی محرم سنة ستین وثلثمائة) فی کتاب صفة قبر النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم عن غنیم بن بسطام المدنی (تابعی مقبول کما فی التقریب) قال رأیت قبر النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فی امارة عمر بن عبدالعزیز فرأیته مرتفعا نحوا من اربع اصابع ورأیت قبر ابی بکر وراءہ ورأیت قبر عمر وراء قبر ابی بکر اسفل منہ ورواہ ابونعیم بزیادة وصورہ لنا۔

المصطفی صلی اللہ علیہ وسلم

ابوبکر رضی اللہ تعالی عنہ

عمر رضی اللہ تعالی عنہ

②

وقد اختلف اهل السیر وغیرهم فی صفة القبور المقدسة علی سبع روایات اوردها ابوالیمن ابن عساکر فی کتابہ تحفة الزائر والصحیح منها روایتان احدهما ما تقدم عن القاسم والاخری رواها رزین وغیرہ وعلیها الاکثر کما قال المصنف فی الفصل الثانی وقال السمهودی انها المشهورة والسمهودی انها اشهرها ان قبرہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم الی القبلة مقدما بجدار ها ثم قبر ابی بکر حذاء منکبی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وقبر عمر حذاء منکبی ابی بکر رضی اللہ تعالی عنهما وهذه صفتها

المصطفی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم

الصدیق رضی اللہ تعالی عنہ

الفاروق رضی اللہ تعالی عنہ

وصورة واحدة من الضعیفة ملاعبة لذکرها جمیعا اعرض عنها فی المواهب وشرحها قلت وقد ذکر السبع جمیعا الامام البدر محمود العینی فی عمدة القاری شرح صحیح البخاری ووضع المؤلف صفة الروضة هکذا

قبر النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم

قبر عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالی عنہ

قبر ابی بکر رضی اللہ تعالی عنہ

(٣)

ابوبكر مؤخر قليلا عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم
خلفه وعمر خلف رجلي ابي بكر رواه ابو داؤد والحاكم
وصحيح اسناده عن القاسم بن محمد الحديث قال السمهودي
وهذا ارجح مما روي عن القاسم ثم صورها عن ابن عساكر هكذا

قبر النبي صلى الله تعالى عليه وسلم | قبر عمر رضي الله تعالى عنه

قبر ابي بكر رضي الله تعالى عنه

وصورها ابو الفرج ابن الجوزي بوضعها هكذا ونسب ابن
حجر هذه الصفة الى الاكثر اه مختصرا قلت وصح معاني
الكتاب تخليط واضطراب عليه خفي وزاده سيد
المرتضى في النقل عنه في شرح الاحياء شيئا لم اجده في
نسختي شرح الدلائل فلا ادري هو صحيح في نفسه وذلك انه لم
يذكر في المطالع عن ابن الجوزي صورة جديدة فكان قوله
هكذا اشارة الى ما مر وهو الذي نسبه ابن حجر الى الجمهور
والاكثر كما فيما يذكر اما المرتضى فنقل تصويره
من المطالع عن ابن الجوزي بعد قوله هكذا هكذا

صلى الله عليه وسلم

ابوبكر رضي الله تعالى عنه

عمر رضي الله تعالى عنه

(٢)

ثم عقبه بقوله ونسب ابن حجر هذه الصفة الى الاكثر الخ فلا
ادري لعل هذا الغلط في التصوير من الناسخ والله تعالى اعلم
[illegible]
رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم ان يتأخر الى صوب يمينه
قدر ذراع السلام على ابي بكر الصديق رضي الله تعالى عنه
وكرم الله وجهه لان راسه عند منكب رسول الله صلى الله تعالى
عليه وسلم ثم تأخر الى يمينه ايضا قدر ذراع السلام على سيدنا
عمر رضي الله تعالى عنه لان راسه عند منكب ابي بكر وهذه
صورة القبور الثلث والكيفية على الاصح المذكور وعليه الجمهور
ثم قال بعد التصوير اقتربت وضعها على هذه الكيفية لا لما
لمطابقة عند توجيه الزائرين اليهم . الخ

अगर — معاذ الله — दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ से नक़्शे मुक़द्दसा (हुज़ूर के रोज़े की तस्वीर) निकाला जाए तो न सिर्फ़ दलाइलुल ख़ैरात बल्कि उन सब अहादीस की किताबों व सिरत की किताबों वग़ैरा के औराक़ (सफ़ा,pages) फाड़ दिए जाए, और उन अइम्मा-ए-मोहद्देसीन के बनाए हुए नक्शों (तस्वीरों) का क्या इलाज हो, जो ज़माने ताबाईन व तबे तबाईन इसे हर ज़माने में हदीस की रिवायतों में नक़्शे (हुज़ूर के रोज़े की तस्वीर) बनाते आए हैं ।

अल्लाह — عزوجل — उँच नीच की मुसीबत व आफ़त से बचाए दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ को लिखे हुए पौने पाँच सौ बरस गुज़रे जब से येह किताब उमदह

मशरिक व मग़रिब अ़रब व अ़जम , तमाम जहान के ओ़लमा व औलिया व नेकों में दीन व ईमान की हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा हो रही हैं और येह इसकी ख़ूबी व ख़ुदा और रसूल ——— جل جلالہ وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ——— की बारगाह में इस की कुबूलियत ज़ैद व उमर (यानी इसके उसके) मिटाए नही मिट सकती ।

ہمہ شیران جہاں بستۂ ایں سلسلہ اند؛ روبہ از حیلہ چساں بگسلد ایں سلسلہ را

हॉ अब नये ज़माने के घराने में वोह गुमराह भी पैदा हुए जो ——— عیاذاً باللہ ———(अल्लाह की पनाह) दलाइलुल ख़ैरात को शिर्क व बिदअ़त की कान (feactari) कहते हैं, मगर उन के बकने से उम्मते मर्हूमा का इत्तेफ़ाक़ व एतेमाद नहीं टूट सकता । ———

مہ فشاند نور وسگ عوعو کند ہر کسے بر خلقت خود می تند

कश्फ़ुन्नून में है ......———

دَلَائِلُ الْخَيْرَاتِ آيَةٌ
مِنْ آيَاتِ اللهِ يُوَاظِبُ بِقِرَاءَتِهِ فِي الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ وَ دَلَائِلُ
اخْتِلَافٌ فِي النُّسَخِ لِكَثْرَةِ رِوَايَتِهَا عَنِ الْمُؤَلِّفِ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى
لَكِنِ الْمُعْتَبَرُ نُسْخَةُ أَبِي عَبْدِاللهِ مُحَمَّدِ السهيلي كَانَ الْمُؤَلِّفُ صَحَّحَهَا
قَبْلَ وَفَاتِهِ بِثَمَانِ سِنِيْنَ سَادِسْ رَبِيعُ الْأَوَّل ۸۶۲ھ ملخصا ———

यान किताब दलाइलुल ख़ैरात अल्लाह तआला की आयतों से एक आयत है के मशिरक़ व मग़रिब हर जगह हमेशा पढ़ी जाती हैं उस के नुस्ख़े मुख़्तलिफ़ हैं के उसके मुअल्लिफ़ (लेखक)——رحمۃ اللہ تعالیٰ——से उस की रिवायतें बहुत ज़्यादा हैं मगर भरोसे मन्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद सहेली का नुस्ख़ा है के मुसन्निफ़ (लेखक) علیہ الرحمہ ने अपने इन्तिक़ाल से आठ बरस पहले 6 रबीउल अव्वाल 862 हिजरी को उसे दोबारा पढ़ कर सही फ़रमाया था ।

(13) अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अहमद बिन अ़ली फ़ासी क़सरी "मुताले" में फ़रमाते है...

——— أَعْقَبَ الْمُؤَلِّفُ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى وَرَضِيَ عَنْهُ تَرْجَمَةَ
الْأَسْمَاءِ بِتَرْجَمَةِ صِفَةِ الرَّوْضَةِ الْمُبَارَكَةِ مُوَافِقًا وَتَابِعًا
لِلشَّيْخِ تَاجِ الدِّيْنِ الْفَاكِهَانِيِّ فَإِنَّهُ عَقَدَ فِي كِتَابِهِ الْفَجْرِ
الْمُنِيْرِ بَابًا فِي صِفَةِ الْقُبُوْرِ الْمُقَدَّسَةِ وَمِنْ فَوَائِدِ ذٰلِكَ أَنْ يَزُوْرَ
الْمِثَالَ مَنْ لَمْ يَتَمَكَّنْ مِنْ زِيَارَةِ الرَّوْضَةِ وَيُشَاهِدُهُ مُشْتَاقٌ
وَيَلْثِمُهُ وَيَزْدَادُ فِيْهِ حُبًّا وَشَوْقًا ———

किताब दलाइलुल ख़ैरात के मुअल्लिफ़ (लेखक) ने हुज़ूर सैय्यदे आलम — صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के नामों के ज़िक्र के बाद आप के रोज़-ए-मुबारका के मुतअल्लिक़ इमाम ताजुद्दीन ख़ाकहानी के ज़रीये से फ़रमाया कि उन्हों ने भी अपनी किताब "फ़जरे मुनीर" में हुज़ूर के रोज़े मुक़द्दसा की तस्वीर में ख़ास एक बाब (chapter) ज़िक्र किया और उस में बहुत फ़ायदे हैं जैसे येह के जिसे हुज़ूर के रोज़ा-ए-मुबारका की ज़ियारत का मौक़ा न मिले वोह हुज़ूर के रोज़ा-ए-पाक की तस्वीर की ज़ियारत करे, दीदार के ख़्वाहिश मन्द उसे देखे और बोसा दे के इससे नबी صلی اللہ علیہ وسلم की मुहब्बत और हुज़ूर का शौक़ दिल में बड़ेगा । اللھم ارزقنا آمین

(14) उसी में है..

قد كنت رأيت تاليفا لبعض المشارقة يقول فيه إنه ينبغي لذاكر اسم الجلالة من المريدين أن يكتبه بالذهب في ورقة ويجعله نصب عينيه فإذا صور قارئ هذا الكتاب الروضة صورة حسنة بألوان حسنة وخصوصا بالذهب فهو من معنى ذلك

(फ़रमाते है) मैं ने बाज़ ओलमा-ए-मशारिक़ की किताबों में देखा के जो मुरीद इस्मे पाक — الله —(अल्लाह) का ज़िक्र करें उसे चाहिये के नामे पाक अल्लाह एक वरक़ में सोने से लिख कर अपनी नज़र के सामने रखे तो जब उस किताब को पढ़ने वाला रोज़ा-ए-मुक़द्दसा की ख़ूबसूरत तस्वीर ख़ुशनुमा रंगों से रंगीन ख़ुसूसन सोने के पानी से बनाए तो उसी दलील से है ।

(15) उसी में है.. قد ذكر بعض من تكلم

على الأذكار وكيفية التربية بها أنه إذا كمل لا إله إلا الله محمد رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فليشخص بين عينيه ذاته الكريمة بشرينه من نور في ثياب من نور يعني تنطبع صورته صلى الله تعالى عليه وسلم في روحانيه ويتابعها تاليفا يتمكن به من الاستفادة من أسراره

وَالْاِقْتِبَاسِ مِنْ اَنْوَارِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فَاِنْ لَّمْ يُرْزَقْ تَشَخُّصَ صُوْرَتِهٖ فَيَرٰى كَاَنَّهٗ جَالِسٌ عِنْدَ قَبْرِهِ الْمُبَارَكِ يُشِيْرُ اِلَيْهِ مَتٰى مَا ذَكَرَهٗ فَاِنَّ الْقَلْبَ مَتٰى مَا شَغَلَهٗ شَيْئٌ اِمْتَنَعَ مِنْ قَبُوْلِ غَيْرِهٖ فِى الْوَقْتِ اِلٰى آخِرِ كَلَامِهٖ فَيَحْتَاجُ اِلٰى تَصْوِيْرِ الرَّوْضَةِ الْمُشَرَّفَةِ وَالْقُبُوْرِ الْمُقَدَّسَةِ لِيَعْرِفَ صُوْرَتَهَا وَيَشْخَصَهَا بَيْنَ عَيْنَيْهِ مَنْ لَّمْ يَعْرِفْهَا مِنَ الْمُصَلِّيْنَ عَلَيْهِ فِىْ هٰذَا الْكِتَابِ وَهُمْ عَامَّةُ النَّاسِ وَجُمْهُوْرُهُمْ ـــــ

बाज़ औलिया-ए-किराम जिन्हों ने मुरीदीन की तरबीयत के लिए ज़िक्र की कैफ़ीयत बयान की - फ़रमाते हैं कि जब لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم का ज़िक्र कर ले तो चाहिये के हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم का तसव्वर अपनी आँखों में जमाए बशरी सूरत नूरानी सूरत नूर के लिबास में ताके हुज़ूरे अक़दस — صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم की सूरते करीमा उस के आईन-ए-दिल में जम जाए और उससे वोह मुहब्बत पैदा हो जिस के सबब हुज़ूर के असरार (भेद) से फ़ायदा ले हुज़ूर के आनवार के फूल चुने और जिसे येह तसव्वर न आ सके वोह यही ख़्याल जमाए के गोया मज़ारे मुबारक के सामने हाज़िर है और हर बार जब ज़िक्र में हुज़ूर का नामे पाक आए तसव्वर में मज़ारे अक़दस की तरफ़ इशारा करता जाए के दिल जब एक चीज़ से डूब जाता है फिर उस वक़्त दूसरी चीज़ क़ुबूल नहीं करता तो अब हुज़ूर के रोज़ा-ए-मुतहरह व (बुज़ुर्गों) के मज़ारात की तस्वीर बनाने की ज़रूरत हुई के जिन दलाइलुल ख़ैरात पढ़ने वालों ने उन की ज़ियारत न की और अक्सर ऐसे ही हैं वोह इन्हें पहचान लें और ज़िक्र के वक़्त उन का तसव्वर ज़ेहन में जमाएँ ।

(16) उसी में है.................. وَقَدْ اِسْتَثْنَا لِمِثَالِ النَّعْلِ عَنِ النَّعْلِ وَجَعَلُوْا مِنَ الْاِكْرَامِ وَالْاِحْتِرَامِ مَا لِلْمَنُوْبِ عَنْهُ وَذَكَرُوْا لَهٗ خَوَاصَّ وَبَرَكَاتٍ وَقَدْ جُرِّبَتْ وَقَالُوْا فِيْهِ اَشْعَارًا كَثِيْرَةً وَتَفَوَّقُوْا فِىْ صُوْرَتِهٖ وَرَوَوْهُ بِالْاَسَانِيْدِ وَقَدْ قَالَ الْقَائِلُ ؎ اِذَا مَا الشَّوْقُ اَقْلَقَنِىْ اِلَيْهَا وَلَمْ اَظْفَرْ بِمَطْلُوْبِىْ لَدَيْهَا ؛ نَقَشْتُ مِثَالَهَا

فِی الْکَفِ نَقْشْنَا وَقُلْتُ لِنَاظِرِیْ قَصْرًا عَلَیْھَا

ओलमा-ए-किराम ने नाले मुक़द्दस (हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की जूतियाँ मुबारक) की तस्वीर को हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की अस्ल जूतियों की तरह बताया और उस के लिए वही इज़्ज़त व एहतराम जो अस्ल के लिए था साबित ठहराया और उस तस्वीरे मुबारका के लिए उस की ख़ूबियाँ व बरकते ज़िक्र फ़रमाई और बिला शुबह वोह तजुर्बे में आए और उस की शान में बहुत ज़्यादा अश्आर कहे और उस की तस्वीर में रिसाले (किताबें) लिखी और उसे सनदों के साथ रिवायत किया और कहने वाले ने कहा के "जब उसकी आतिशे शौक़ मेरे सीने में भड़कती है और उसका दीदार नसीब नहीं होता (यानी हुज़ूर की नलैन शरीफ़ देखने की तड़प दिल में उठती है और उसका दीदार नसीब नहीं होता) उसकी तस्वीर हाथ पर खीच कर आँख से कहता हूँ इसी पर बस (सब्र) कर ।

⑰ अल्लामा ताज फ़ाकहानी "फ़जरे मुनीर" में फ़रमाते है..........................

مِنْ فَوَائِدِ

ذٰلِكَ اِنْ لَّمْ يُمْكِنْهُ زِيَارَةُ الرَّوْضَةِ فَلْيَبْرِزْ مِثَالَهَا وَلْيَلْثِمْهُ مُشْتَاقًا لِاَنَّهٗ نَابَ مَنَابَ الْاَصْلِ كَمَا قَدْ نَابَ مِثَالُ نَعْلِهِ الشَّرِيْفَةِ مَنَابَ عَيْنِهَا فِي الْمَنَافِعِ وَالْخَوَاصِ بِشَهَادَةِ التَّجْرِبَةِ الصَّحِيْحَةِ وَلِذَا جَعَلُوْا لَهٗ مِنَ الْاِكْرَامِ وَالْاِحْتِرَامِ مَا يَجْعَلُوْنَ لِلْمَنُوْبِ عَنْهُ الخ

नक़्शा रोज़ा-ए-मुबारका (यानी हुज़ूर के रोज़ा-ए-मुबारका की तस्वीर) के बनाने में एक फ़ायदा येह है के जिसे अस्ल रोज़े अक़्दस की ज़ियारत न मिली वोह इस तस्वीर की ज़ियारत करे और शौक़े दिल के साथ उसे बोसा दे कि येह अस्ल रोज़े की ही तरह है जैसे हुज़ूर के नलैन की तस्वीर यक़ीनन ख़ूबियों वाली व फ़ायदे मन्द है उसी तरह येह भी है जिस पर सही तजुर्बा गवाह हैं लिहाज़ा ओलमा-ए-दीन ने इन तस्वीरों की इ़ ़ज़्ज़त व अज़मत वही रखी जो अस्ल की रखते हैं ।

⑱ हज़रत मुसन्निफ़ दलाइलुल ख़ैरात قدس سرہ العزیز उस की शरहे क़बीर में इसे नक़्ल फ़रमाते है और अल्लामा मम्दूह की तरह बयान फ़रमाते है............

حَيْثُ قَالَ اِنَّمَا ذَكَرْتُهَا نَابُوا بِالشَّيْخِ تَاجِ الدِّيْنِ

الفاکہانی فانہ عقد فی کتابہ الفجر المنیر بابا فی صفۃ القبور المقدسۃ وقال ومن فوائد ذلک الخ ——————

(19) इमाम अबू इसहाक़ इब्राहीम मुहम्मद बिन ख़लफ़ुल सलमा शहीरबा बिन अलहाजुल मुतरली उन्दलेसी —— رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ने नलैने मुक़द्दस के बयान में एक ख़ास किताब लिखी है ।

(20) इसी तरह उन के शागिर्द शेख़ अज़ीज़ अबूल यमान इब्ने असाकर ने निहायत ही ख़ूबसूरत व अज़ीम किताब लिखी जिसे —— بخدمت النعل المقدم المحمدی —— नाम दिया गया जिस के साथ बड़े बड़े इमामों ने हदीस की किताब की तरह उसे रिवायत किया उसे सुना और सुनाया ।

(21) इमाम अहमद मुहम्मद ख़तीब क़ुस्तलानी साहिबे इरशादुस्सारी शरहे सही बुख़ारी अपनी किताब मुवाहिबुद दुनिया व मिनहु मुहम्मदिया में फ़रमाते है....... ....

الیمن ابن عساکر تمثال نعلہ الکریم علیہ افضل الصلاۃ والتسلیم فی جزء مفرد رویتہ قراءۃ وسماعا وکذا افردہ بالتالیف ابو اسحق ابراھیم بن محمد بن خلف السلمی المشھور بابن الحاج من اھل المریۃ بالاندلس وکذا غیرھما وللہ در ابی الیمن بن عساکر حیث قال ؎

یامنشدا فی رسم ربع خال	والثم ثری الاثر الکریم محبذا
لاحبۃ بانوا وعصر خال	فی تربھا وجدا وفرط تغال
صافح بھا خدا وعفر وجنۃ	ھملت لم آک العیون وقد نالے
لمحلک الاسمی الشریف العالی	شوقا عقیق المدمع الھطال
وتذکرت عھد العقیق فاثرت	لو ان خدی یحتذی نعلالھا
والجود والمعروف والافضال	ارض سمت عزا بذا الاذلال
اون اجفانی لوط ونعالھا	دع مندب آثار وذکر ما تر
وھنا شد الدوارس الاطلال	ان فزت منہ بلثم ذو التمثال
یاشبہ نعل المصطفیٰ روحی الفدا	اذکرتنی قدما لھا قدم النعلی

وفا العیون بغیر ما اھمال   بلغت من نیل المنیٰ آمالی
او بالانقاط

(इस का) ख़ुलासा येह हैं कि अबूल यमन इब्ने असाकर ने नलैने अक़दस की तस्वीर के मुतअल्लिक़ एक ख़ास किताब लिखी जिसे मैं ने उस्ताद से पढ़ कर और उस्ताद से सुन कर रिवायत किया और इसी तरह इब्ने अलहाज उन्दलेसी वग़ैरा ओलमा ने इस बारे में बिलख़ुसूस किताबें लिखी और अल्लाह عزوجل के लिए हैं ख़ूबी अबूल यमान इब्ने असाकर की क्या ख़ूब क़सीदा "मदह शर शवीड शरीफ़" में लिखा जिस में फ़रमाते हैं......."अए मिटने वाली चीज़ों की याद करने वाले इन चीज़ों की याद छोड़ और मुस्तफ़ा—صلی اللہ علیہ وسلم—के तबर्रुकाते शरीफ़ा की ख़ाक बोसी कर ज़हे नसीब अगर तुझे उस तस्वीर नलैने मुबारक का बोसा मिले अपना चेहरह उस पर रख और उस की ख़ाक पर अपना चेहरह मल........अए नलैने मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ وسلم—की तस्वीर तेरी इज़्ज़त व शरफ़े बुलन्दी पर मेरी जान क़ुर्बान तुझे देख कर आँखें ऐसी बह निकली के अब थमना बहुत दूर है तुझे देख कर इन्हें (इन आँखों को) मदीने की वादी-ए-अक़ीक़ में मुस्तफ़ा—صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم—की रफ़्तार याद आ गाई लिहाज़ा अपने बहते आँसूओं के सुर्ख़ सुर्ख़ क़ीमती मोती निछावर कर रहे हैं-अए तस्वीरे नलैने मुबारक तू ने मुझे वोह कदमे पाक याद दिलाया जिस के बुलन्दी वजूद व एहसान व फ़ज़्ल बहुत ज़माने पहले से हैं अगर मेरा चेहरह काट कर (हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم) के क़दम के लिए जूता बनाते तो दिल की तमन्ना पूरी हो जाती या मेरी आँख उन की जूतियाँ मुबारक के लिए ज़मीन होती तो उस के ज़मीन होने से (मेरी आँख) इज़्ज़त का आसमान बन जाती ।—ع جزاک اللہ خیرا یا یامین ؎

(22) अबूल हाकम बिन अब्दुर रहमान अलशहीरया बिन अलरहल (जिन के मुतअल्लिक़) इमाम बक़्यातुल हिफ़्फ़ाज़ इब्ने हजर असकलानी ने तबसीर में उन का ज़िक्र लिखा । हुज़ूर के नलैने मुबारक की तारीफ़ में उन का क़सीदा "गुर्रा" शेख़ इब्नुल हाज ने अपनी उसी किताब में ज़िक्र किया (और) इमाम क़ुस्तलानी ने उस क़सीदे के बारे में—مَا اَحْسَنَهَا कहा, "यानी क्या ख़ूब फ़रमाया" उस के कुछ अश्आर (किताब) मुवाहिब में येह है..

مثال لنعلی من احب ھویتہ   فھا انا فی یومی ولیلی لاثم
اشد فی رحل اکرم من مشٰی   فتبصرہ عینی وکانما حاملہ
ومن لی بوقع النعل فی حروجنتی   لماش علت فوق النجوم مواجھہ

ودانطبه فوق الشئون عتيمة	لجفنی نعل الجفن یوما ساجمه
یود هلال الافق بوانه ھوے	یزاحمنا فی لثمه ونزاحمه
اُجرّ علی رای وجهه ادعه	والثمه طورا وطورا الازمه
اجوک خدی ثم احسب قعه	علی وجنتی خطوا هناک یدادمه
ساجعله فوق التراب عوذة	بقلبی نعل القلب یبرد حاجمه
الابابی تمثال نعل محمد	لطاب لحاذیه وقدس خادمه
سلام علیه کلما هبت الصبا	وغنت باغصان الاراک حمائمه

यानी अपने महबूब–صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم–की नलैने पाक की तस्वीर को मैं दोस्त रखता हूँ अपने सर और मुँह पर रखता और रात दिन उसे बोसा देता हूँ, अपने सर और मुँह पर रखता और कभी चूमता कभी सीने से लगाता हूँ मैं अपने ध्यान में उसे महबूब–صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم–के पाए अक़्दस (पैर मुबारक) में तसव्वर करता हूँ तो बहुत ज़्यादा सच्चे दिल से तसव्वर से गोया अपनी आँखों से जागते में देख लेता हूँ उस नलैने पाक के नक़्श (तस्वीर) को अपने चेहरह पर हरकत देता हूँ और येह ख़्याल करता हूँ कि गोया हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم उसे पहने हुए मेरे चेहरह पर चल रहे है। आह ! कौन ऐसी सूरत कर दे के वोह हुज़ूर के पैर मुबारक जो आठवे आसमान के सितारे के सरों पर बुलन्द हुए उन की जूती मुबारक पर चलने में मेरे चेहरह पर पड़े मैं नलैने मुबारक की तस्वीर को अपने सीने पर दिल का तअवीज़ बना कर रखूँगा शायद दिल की आँख ठन्ड़ी हो मैं उसे सर पर आँखों का तअवीज़ बना कर बान्धूँगा शायद बहती पल्के रूके ; सुन लो तस्वीरे नलैने मुक़द्दस पर मेरा बाप क़ुर्बान-क्या अच्छा है उस का बनाने वाला और जो उस की ख़िदमत करे पाक हो जाए । नये चांद की तमन्ना है काश आसमान से उतर कर इस नलैने मुक़द्दस को चूमने में हम और वोह आपस में एक दूसरे से आगे बड़ने की कोशिश करते अल्लाह —عزوجل— का सलाम मुहम्मह صلی اللہ علیہ وسلم पर जब तक सुबह की ख़ुशगवार हवा चले और जब तक दरख़्तों की ड़ालियों पर कबूतर गूँजें । اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاُمَّتِہٖ اَبَدًا اٰمِین

(23) उसी मुवाहिबुद दुनिया में है..

—————— مِنْ بَعْضِ مَا ذَکَرَ مِنْ فَضْلِھَا وَجَرَّبَ

مِنْ نَفْعِھَا وَبَرَکَتِھَا مَا ذَکَرَہٗ اَبُوْ جَعْفَرٍ اَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ الْمَجِیْد

وكان شيخنا الصالح الورع قال حدثت هذا المثال بعض الطلبة
فجاءني يوما فقال رأيت البارحة من بركة هذا النعل
عجبا أصاب زوجي وجع شديد كاد يهلكها فجعلت النعل
على موضع الوجع وقلت اللّٰهم اشف ببركة هذا النعل
فشفاها الله للحين ———————

नलैने मुबारक की फ़ज़ीलतें जो ज़िक्र किये गए और उस के फ़ायदे व बरकतें जो तजुर्बो में आए उन में से वोह हैं जो शेख़ सालेह साहिबे वरक़ा व तक़वा अबू जाफ़र अहमद बिन अब्दुल मजीद ने बयान फ़रमाया के मैं ने नलैने मुक़द्दस की तस्वीर अपने बाज़ शार्गिदों को बना दी एक रोज़ उन्हों ने आ कर कहा रात मैं ने इस तस्वीरे मुबारक की अ़जिब बरकत देखी मेरी बीवी को एक सख़्त दर्द हुआ के मरने के क़रीब हो गाई मैं ने नलैने मुबारक की तस्वीर को दर्द की जगह पर रख कर दुआ की के इलाही इस की बरकत से शिफ़ा दे, अल्लाह–عز وجل–ने फ़ौरन शि[illegible] बख़्शी ।

(24) और इमाम क़ुस्तलानी फ़रमाते हैं के अबूल इसहाक़ इब्राहीम बिन अलहाज फ़रमाते हैं के उनके शेख़, शेख़ अबू क़ासिम बिन मुहम्मद फ़रमाते है... ومما جرب

من بركته أن أمسكه عنده متبركا به كان أمانا له من بغي
البغاة وغلبة العداة وحرزا من كل شيطان مارد ومن كل حاسد
وإن أمسكته الحامل بيمينها وقد اشتد عليها الطلق تيسر أمرها
بحول الله تعالى وقوته ———————

नलैने मुबारक की तस्वीर की आज़माई हुई बरकतों से है के जो शख़्स उसे अपने पास रखे ज़ालिमो के ज़ुल्म और दुश्मनों के ग़लबे से [illegible] पाए और वोह तस्वीरे मुबारक हर सरकश शैतान हर हसद करने वाले की बुरी नज़र से उस की पनाह हो जाए और हामला (पेट वाली औरत) के दर्द के वक़्त में अगर उसे अपने दाहिने हाथ में ले अल्लाह के करम से उस का काम आसान हो ।

(25) अ़ल्लामा अहमद बिन मुहम्मद मक़री तलसमानी ने इस बारे में दो ख़ास किताबें लिखी एक ——————— النفحات العنبرية في وصف نعل خير البرية

के बहुत फ़ायदे मन्द है और दूसरी فتح المتعال فی مدح خیر النعال काफ़ी बड़ी व जामए हैं इन किताबों में अजीब अजीब फ़ज़ीलते व बरकते व आफ़तों के दूर होने व हाजत पूरी होने के मुतअल्लिक़ जो नलैने मुबारक के फ़ायदे लिखे वोह ख़ूद देखे गए और पहले के व हर ज़माने के बुज़ुर्गों ने देखे उसे ख़ूब ख़ूब बयान किया हैं उनका ज़िक्र कफ़ी तवील हैं जो चाहे —فتح المتعال— को पढ़े अब हम मुख़्तसर उन बाकी अइम्मा व ओलमा के कुछ ही नाम बयान करते हैं जिन्हों ने नलैने मुबारक की तस्वीरों को बनाया, बनवाया, बना कर अपने शार्गिदों को अता फ़रमाया उस से तबर्रुक किया उस की तअरीफ़े लिखी उस से फ़ैज़ व बरकत हासिल करने उसे सर ऑखों पर रखने की रग़बत दिलाई हदीसों की तरह एहतेमाम के साथ उस की रिवायतें फ़रमाई जिसे तफ़्सील देखनी हो—فتح المتعال—वग़ैरा को पढ़े ।

(26) इमामे अजल अबू ऊवेस अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन ऊवेस अबूल फ़ज़्ल बिन मालिक बिन अबी आमिर असबिह मदनी, के मदीना तय्यबा के बड़े ओलमा व अइम्म-ए-मोहद्देसीन व रिजाल सही मुस्लिम व सुनन अबी दाऊद तिर्मिज़ी व नसाई व इब्ने माजा और तबे तबाईन के आला तबके से हैं इमाम मालिक رضی اللہ عنہ के भतीजे है 167 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया उन्हों ने ख़ूद अपने वासते इमाम मालिक वग़ैरा अकाबिरे तबाईन व तबे ताबईन के ज़माने में हुज़ूरे अक़दस—صلی اللہ——تعالیٰ علیہ وسلم— की नलैने अक़दस बनवा कर अपने पास रखी और ज़माना ब ज़माना उस नलैन के नक़्शे हर तबके के ओलमा लेते रहे ।

(27) उनके साहबज़ादे इमाम मुस्लिम के उस्ताद और बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ के रावियों में से हैं और शुरू के तबे ताबईन के आला तबके से है इमाम शाफ़ई व इमाम अहमद—رضی اللہ تعالیٰ عنہما—के साथ के हैं, 226 हिजरी में वफात पाई ।

(28) उन के शार्गिद अबू यहयहा बिन अबी मैसरह (29) उन के शागिर्द अबू मुहम्मद इब्राहीम बिन सहेल सुबती (30) उन के शागिर्द अबू सईद अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह मक्की (31) उनके शागिर्द मुहम्मद बिन जाफ़र तमीमी (32) उनके शागिर्द मुहम्मद बिन हुसैन फ़ारसी (33) उनके शागिर्द शेख़ अबू ज़करया अब्दुर रहीम बिन अहमद बिन नस बिन इसहाक़ बुख़ारी (34) उनके शागिर्द शेख़ फ़क़ीयह अबूल क़ासिम हली बिन अब्दुस्सलाम बिन हसन रूम्ली (35) उनके शागिर्द शेख़ अयाज़ (36) दूसरे शागिर्द इमामे अक़मली हाफ़िज़ुल हदीस क़ाज़ी अबू बकर इब्ने अरबी शिबीली उन्दलेसी (37) इन दोनों के शागिर्द इमाम इब्ने अरबी के साहबज़ादे फ़क़ीह अबू ज़ैद अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (38) उन के शागिर्द इब्नुल हय्या (39) उनके शागिर्द शेख़ इब्नुल तबर तोलस्नी (40) उनके शागिर्द शेख़ इब्ने फ़हेद मक्की (41) इमामे अजल

इब्ने अरबी मम्दूह के दूसरे शागिर्द अबूल क़ासिम ख़लफ़ बिन बशकूवाल (42) उनके शागिर्द अबू जाफ़र अहमद बिन अ़ली ऊसी जिन के शागिर्द अबूल क़ासिम बिन मुहम्मद और उनके शागिर्द अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन हाज, उन के शागिर्द अबूल यमन इब्ने असाकर है जिन के अकवाले तय्यबा उपर लिखे ज़ा चुके है (43) इमाम इस्माईल बिन अबी ऊवेस मदनी मम्दूह के दूसरे शागिर्द अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन हुसैन (44) उनके शागिर्द मुहम्मद बिन अहमद ख़ज़ारी असबहानी (45) उनके शागिर्द अबू उसमान सअ़दी बिन हसन तसतरी (46) उनके शागिर्द अबू बकर मुहम्मद बिन, अ़दी बिन अ़ली मुनकरी (47) उनके शागिर्द अबू तालिब अब्दुल्लाह बिन हसन बिन अहमद अन्बरी (48) उनके शागिर्द अबू मुहम्मद अब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अहमद कनानी (49) उनके शागिर्द अबू मुहम्मद हैबतुल्लाह बिन अहमद बिन मुहम्मद अकफ़ानी व मश्क़ी (50) उन के शागिर्द हाफ़िज़ अबू ताहिर अहमद बिन मुहम्मद बिन अहमद सिकन्दरी (51) उनके शागिर्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान तजीबी (52) उनके शागिर्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सुवती, उनके शागिर्द अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन अलहाज सलमी मम्दूह उनके शागिर्द इब्ने असाकर (53) उनके शागिर्द बद्र फ़ारुक़ी-येह तीन सिलसिले सलासिले हदीस की तरह थे इन के अलावा (54) इमाम अबू हिफ़्स उमर फ़ाकहानी इसकन्दरानी (55) शेख़ यूसुफ़ तताई मालकी (56) फ़क़ीह अबू अब्दुल्लाह बिन सलार (57) फ़क़ीह मोहद्दीस अबू याक़ूब (58) उनके शागिर्द अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन रशीद फ़हरी (59) हाफ़िज़ शहीर अबूल रबीअ़ बिन सालिम कुलाई (60) उनके शागिर्द हाफ़िज़ अब्दुल्लाह बिन आबार क़ज़ाई (61) अबू अब्दुल्लाह मुहम्द बिन जाबिर वादी (62) ख़तीब अबू अब्दुल्लाह बिन मरज़ूक़ तलसमानी (63) इब्ने अब्दुल मालिक मराकशी (64) शेख़ अबूल हेज़ाल (65) अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हक़ अन्सारी मअरूफ़ इब्ने केसाब (66) शेख़ फ़तहुल्लाह हलबी बैलूनी (67) क़ाज़ी शम्सुद्दीन जैफ़ुल्लाह तुराबी रशीदी (68) शेख़ अब्दुल मुन्अम सुयूती (69) मुहम्द बिन फ़रज सुबती (70) शेख़ इब्ने हबीबुन्नबी जिन से अ़ल्लामा तलसमानी ने हुज़ूर के रोज़-ए-मुबारक कि तस्वीर की अजीब फ़ायदे मन्द बरकते रिवायत की (71) सैय्यद मुहम्मद मूसा हुसैनी मालकी मआसर अ़ल्लामा मम्दुह (72) सैय्यद जमालुद्दीन मोहद्दिस साहिबे रोज़तुल एहबाब (73) अल्लामा शहबुद्दीन ख़फ़ाजी जिन्होंने फ़ताहुल मेताल की तअरीफ़ की — بو مصنّف حسن — — फ़रमाया "यानी वोह ख़ूब किताब है (74) फ़ाज़िले कातिब चलपी साहिबे कश्फ़ुल जुनून (75) फ़ाज़िल अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रकानी शारहे मुवाहिब व मोता इमाम मालिक । अब और पॉच अइम्मा-ए-किराम के नाम पर इख़्तेताम कीजिये जिन के बड़े इमाम होने पर सब का इत्तेफ़ाक़ हैं और उनकी शान व अ़ज़मत हर मुल्क में मशहूर व मअ़रूफ़ हैं (76) इमामे अजल हाफ़िज़ुल हादीस जैनुद्दीन ईराकी उस्ताद

इमामुल शान इब्ने हजर असकलानी साहिबुल "फ़यए सीरत" वग़ैरा (77) उनके साहबज़ादे अ़ल्लामा-ए-अ़ज़ीम सैय्यदी अबू ज़रअ ईराक़ी (78) इमामे अजल सिराजुल फ़िक़ाह वल हदीस वल मिल्लते वद्दीन बिलकिनी (79) इमामे जलील मोहद्दिसे नबील हाफ़िज़ शम्सुद्दीन सख़ावी (80) इमामे अजल व अकरम अ़ल्लामा ख़ातिमुल हिफ़्फ़ाज़ वल मोहद्देसीन जलालुल मिल्लते व "शरअए व ददीन" अब्दुर रहमान बिन अबी बकर सुयूती — رضی اللہ تعالیٰ عنہم وعنابہم یوم الدین آمین یارب العلمین मज़ारे अक़्दस की तस्वीर ताबाइने किराम और नलेने मुक़ददस की तस्वीर तबे तबाइनि आ़लाम से साबित और जब से आज तक हर क़र्बालें व तबके के ओ़लमा व सलेहा में इस का वजूद व राएज रहा अकाबिरे दीन (बड़े बड़े बुज़ुर्ग) उन से तबर्रुक करते और उनकी इज़्ज़त व तअ़ज़ीम रखते आए हैं, तो अब इन्हें बुरी बिदअ़त व शिर्क व हराम न कहेगा मगर जाहिल बेबाक या गुमराह बद दीन बीमार व ना पाक दिल والعیاذ باللہ من معاوی الضلال

आज कल के किसी नये (चन्द किताबों) के पढ़े हुए छोटी व नाक़िस अक़्ल रखने वाले की बात उन बड़े बड़े अइम्म-ए-दीन व उन बड़े भरोसे मन्द ओ़लमा के इरशादाते आ़लिया के मुक़ाबले में किसी दीनदार अक़्ल रखने वाले के नज़दीक क्या हैसियत रखती हैं। अक़्ल मन्द इन्साफ़ पसंद के लिए इसी क़द्र कफ़ी है। واللہ الھادی وولی — الایاوی بہ تفتی وعلیہ اعتمادی — अलहमदुलिल्लाह, के येह मुख़्तसर वाज़ेह सही जवाब आख़िर ज़िल हिज्जा मुबारक 1315 हिजरी के चन्द जलसों में मुकम्मल हुआ और उसी लिहाज़ से इसका नाम شفاء الوالہ فی صور الحبیب ۱۳۱۵ हुआ। الحمد للہ رب العلمین وصلی اللہ تعالیٰ علیٰ سیدنا ومزارہ ونوالہ

इस तहरीर के चन्द माह बाद बाज़ साहिबों ने इसके मुख़ालिफ़ आज कल के कुछ लोगों की तहरीर पेश की जिन में किसी क़ाबिले एतमाद या मुस्तनद आ़लिम से इस के ख़िलाफ़ पर हरगिज़ कोई सुबूत न दिया। हम अभी गुज़ारिश कर चुके हैं के अइम्म-ए-दीन व क़ाबिले एतमाद ओलमा के इरशादात के मुक़ाबिल इसकी उसकी बे सुबूत बातें क़ाबिले दलील नहीं हो सकती।

रहा येह के काबा-ए-मुअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा की तस्वीर को उन का ख़ास या तमाम अहकाम (हुक्मों) में मसावी समझना के काबे की तस्वीर के तवाफ़ से हज अदा हो जाए और हज के बाद हुज़ूर के रोज़े की तस्वीर के पास हाज़री ज़ियारते मुक़द्दसा की हाज़री से बराबर हो जाए येह किसी जाहिल का भी ख़्याल नहीं, ऐसे झूटे वहेम अलबत्ता मुश्रिकों व रफ़ज़ियों को पैदा होते हैं, रिसाला असलमा में के वोह कैसा रिसाला और कहाँ तक सही सुबूत पेश करने की लियाक़त रखता इस से हट कर देखे तो उस में इसी वहेम पर एतराज़ है वोह इस तरीक़ा-ए-अनीका पर जो अइम्म-ए-किराम व ओलमा-ए-आलाम में मामूल व मक़्बूल रहा। अस्लन वारद नहीं।